International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 04-04-2022, Accepted: 20-04-2022, Published: 05-05-2022
Volume 8, Issue 3, 2022, Page No. 7-11

मथुरा जनपद में ग्रामीण नगरीय प्रवसन का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव

मधु यादव
एसोसिएट प्रोफेसर (भूगोल) ए.के. कॉलेज, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
मानव विकास की प्रत्येक अवस्था मेंगतिशीलता जनसँख्या की एक आधारभूत विशेषता रही हैं। आर्थिक–प्राविधिकी उन्नति से निरूसन्देह प्रवसन में वृधि हुई हैंद्य भारत जैसे विकासशील देश में गाँव से नगर की ओर होने वाला प्रवसन सर्वाधिक है। शोध पत्र में प्रवासी व्यक्तियों एवं उनसे सम्बंधित विशेषताओं यथा –रूशिक्षा, आय ,वैवाहिक स्तर, प्रवसन स्तर प्रवसन के पूर्व एवं पश्चात व्यवसाय आय आदि का विश्लेषण करना हैं। उद्देश्य परक निर्देशन पद्धति के प्रयोग कर जनपद के 100 प्रवासी परिवारों का अध्ययन किया हैं। शोध पत्र में प्रवासी परिवारों की सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि सम्बन्धी विभिन्न कारकों यथा धर्म, जाति, लिंग, आयु, व्यवसाय आदि पर प्रकाश डाला गया है। मथुरा में सबसे अधिक पिछड़ी व अनुसूचित जाति के परिवार का प्रवास हुआ हैद्य अधिकतर छात्र, एवं नौकरी के लिए लोग प्रवास करते है। परन्तु महिलाओं के सर्वाधिक प्रवास का कारण शादी है। प्रवसन व्यक्तियों में सर्वाधिक लोग विवाहित (71.6:) हैं जबकि अविवाहित अपेक्षाकृत बहुत ही कम लोग (28.4:) हैं। कृषि आधारित उधोगों की स्थापना के पास ही हो इससे बेरोजगारी,अशिक्षितों और मजदूर वर्ग को रोजगार के अवसर मिल सके।

मूल शब्दः प्राविधिकी, प्रवसन, वैवाहिक स्तर, पृष्ठभूमि, बेरोजगारी, अशिक्षित, मजदूर

प्रस्तावना
मानव विकास की प्रत्येक अवस्था में गतिशीलता जनसंख्या की एक आधारभूत विशेषता रही है। आर्थिक–प्राविधिकी उन्नति से निःसदेह प्रवसन में वृद्धि हुई है। जन गतिशीलता सांस्कृतिक विसरण और सामाजिक एकीकरण का आधार रहा है, अतएव जन्म एवं मृत्यु की भांति प्रवसन एवं जनसंख्या परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन में विशेष महत्व है। समान्यतः क्रियाशील आयुवर्ग (15–59 वर्ष) गतिशील होते हैं। उनकी गतिशीलता, विभिन्न उद्देश्यों एवं आवश्यकताओं के कारण होती है तथा उनमें स्वयं को नई दशाओं में अनुकूल ढालने की क्षमता अधिक होती है। यदि ऐसे व्यक्ति स्वयं घर के मुखिया होते हैं तो पूरा परिवार ही प्रवसन में सम्मिलित हो जाता है। प्रवासियों में लिंग असमानता भी देखने को मिलता है। भारत जैसे विकासशील देश में गांव से नगर की ओर होने वाला प्रवसन सर्वाधिक है। लोगों को रोजगार के उपयुक्त एवं कम अवसर होने के कारण गांव छोड़ने के लिए वाध्य होना पड़ता है। इसलिए अध्ययन हेतु मथुरा जनपद में ग्रामीण नगरीय प्रवसन का सामाजिक–आर्थिक प्रभाव मथुरा शीर्षक को चुना गया है।

अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक स्थितिः मथुरा जनपद गंगा यमुना के मैदानी भाग के मध्य स्थित है। यहाँ भी भूजल स्तर 30 प्रतिशत तक नीचे जा चुका है। इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 178 मीटर है। मथुरा जनपद उत्तर प्रदेश की पश्चिमी सीमा पर स्थित है। इस जनपद का विस्तार $27^0$22′ से $27^0$58′ उतरी अंक्षाशों तक $77^0$17′ पूर्वी देशांतर से $78^0$12′ पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है। इसके पूर्व में हाथरस जनपद, उत्तर में अलीगढ़ जनपद, दक्षिण में आगरा जनपद, दक्षिण–पश्चिम में भरतपुर जनपद एवं पश्चिम–उत्तर दिशा में मेवात जनपद स्थिति है। इस जनपद में 5 तहसील, 10 विकासखण्ड स्थित है। जनपद का भौगोलिक क्षेत्रफल 3340 वर्ग किमी0 है। जो उत्तर प्रदेश के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.3 प्रतिशत है। जनपद की जनसंख्या 2547184 (2011) है। साक्षारता दर 74.45 प्रतिशत, जनसंख्या घनत्व 753 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी0 है।

अध्ययन का महत्व– प्रवसन एक भौगोलिक तथ्य है जिसकी प्रत्येक युग में मानव को महती आवश्यकता रही है, क्योंकि यह मानवीय प्रवृति रही है कि जिस स्थान पर जीविकोपार्जन करना दुष्कर होता है, उस स्थान को छोड़कर वह ऐसे स्थान पर जा बसता है जहां जीविकोपार्जन करना तुलनात्मक दृष्टि से सुगम, सरल तथा बेहतर होता है। मानव विकास का इतिहास इस तथ्य का साक्षी है कि मनुष्य एक झुण्ड, गोत्र, आदि घुमन्तु आदिवासी वर्ग के रूप में एक स्थान से दूसरे स्थान को निरन्तर भ्रमण करता रहा है। जनसंख्या में जो शनैः शनैः वृद्धि हुई इस वृद्धि ने भी लोगों को प्रवासन को प्रेरित किया। इसके साथ ही अनेक प्राकृतिक प्रघटनाओं, मानवीय आवश्यकताओं, वृद्धि और अवसर की सीमितता के कारण भी प्रवासन की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला। स्पष्ट है कि मानव जीवन के विकास में प्रवसन का विशेष महत्व है। इसलिए यह अध्ययन मानव के लिए अति महत्वपूर्ण सावित होगा।

अध्ययन का उद्देश्यः प्रस्तुत शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य अध्ययन क्षेत्र में प्रवासी व्यक्तियों एवं उनसे सम्बन्धित विशेषताओं यथा शिक्षा, आय, वैवाहिक स्तर, प्रवसन स्तर, प्रवसन के पूर्व एवं पश्चात् व्यवसाय आय आदि का विश्लेषण करना है। साथ ही प्रवसन के कारणों एवं उसके सामाजिक–आर्थिक प्रभावों को आकलन करना भी अध्ययन में सम्मिलित है।

विधितन्त्रः प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र मथुरा जनपद के समस्त दस विकास खण्डों यथा नन्दगांव, छाता, चौमुहाँ, गोवर्धन, मथुरा, फरह, नौहझील, माँट, राया तथा बल्देव का चयन जनगणना विधि द्वारा कर प्रत्येक विकास खण्ड से दो दो ग्रामों का चयन उद्देश्यपरक निदर्शन पद्धति द्वारा कर प्रत्येक ग्राम से केवल मथुरा नगर में ही प्रवसन करने वाले 5–5 परिवारों का चयन सौद्देश्य निदर्शन पद्धति द्वारा कर अर्थात मथुरा जनपद के सभी दसों विकास खण्डों से चयनित कुल 20 ग्रामों से 100 प्रवासी परिवारों का चयन उपरोक्त अध्ययन की सम्पूर्णता हेतु किया गया है। प्राथमिक आंकड़ों के संकलन हेतु निदर्शित प्रवासी परिवार के मुखिया को ही अध्ययन की निदर्श इकाई माना गया है।

साहित्य सर्वेक्षणः प्रस्तुत शोध पत्र से सम्बन्धित शोध होते रहे हैं इनमें अनवन माइग्रेशन इन इण्डिया–1977 प्रोफेसर डी.पी. सक्सेना, कॉजेज ऑफ इनटरनल माइग्रेशन इन असम–1981 मुस्तका सी.तथा बोग जे.डी.,रॉयल स्टेटिस्टीकल सोसाइटी 1975 ई.जी. रॉविन्स्टीन का प्रकाशित शोध पत्र प्रवसन के नियम आदि प्रमुख हैं।

मथुरा जनपद में ग्रामीण नगरीय प्रवसन का सामाजिक–आर्थिक प्रभावः मनुष्य एक चिन्तनशील तथा सर्वाधिक जिज्ञासु प्राणी है इसलिए वह अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए सततन तथा आजीवन प्रयत्नशील रहता है, जिसमें भौगोलिक परिस्थितियां, सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमियां अहम भूमिका का निर्वाह करती हैं। शोधार्थी ने प्रवासी परिवारों की सामाजिक आर्थिक प्रृष्ठभूमि सम्बन्धी विभिन्न कारकों यथा धम्र, जाति, लिंग, आयु, व्यवसाय आदि निम्नलिखित तालिका मथुरा जनपद के प्रवासी परिवारों के मुखियाओं की धर्मवृत्तिका पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

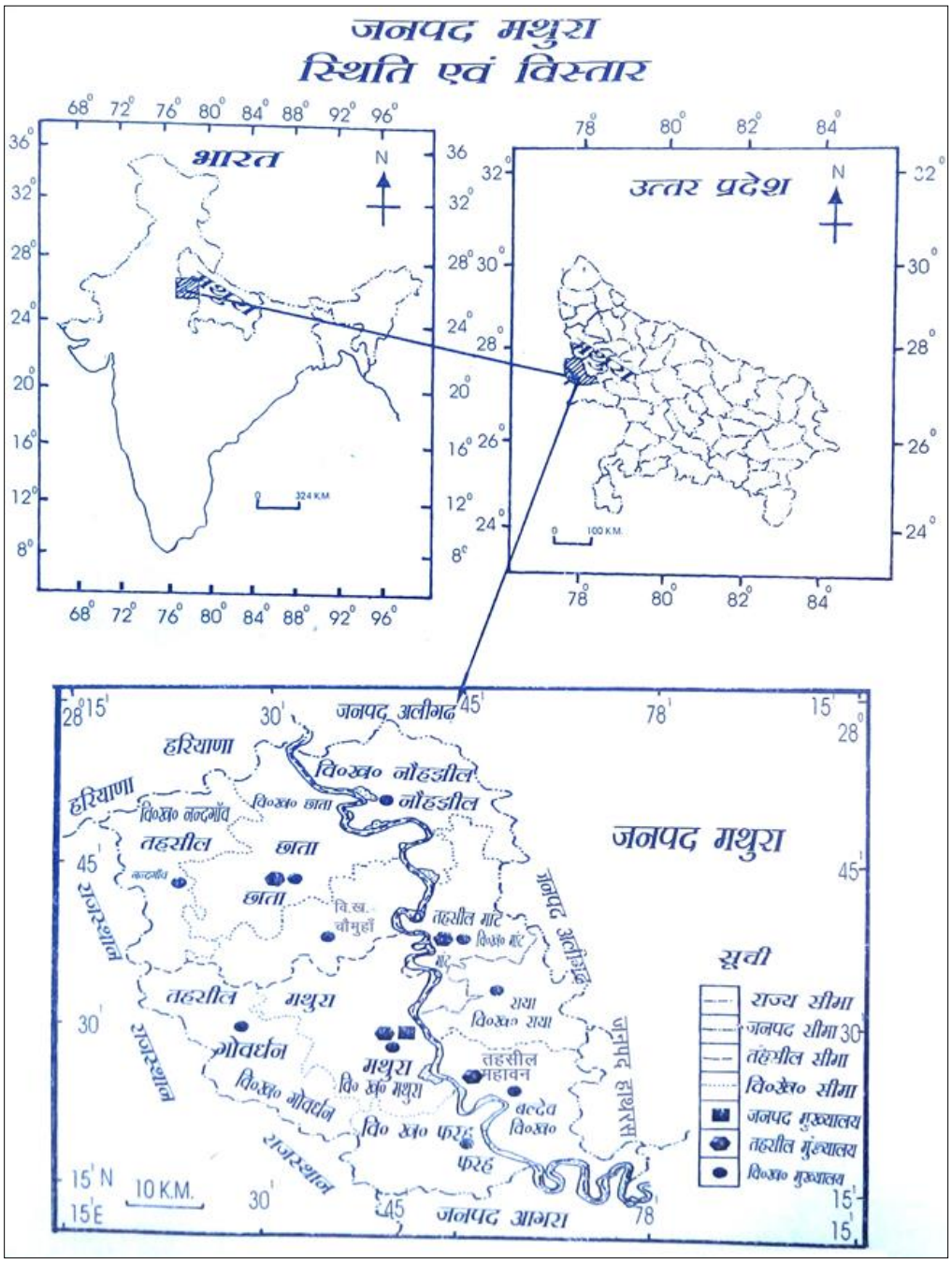

चित्र 1

तालिका 1: प्रवासी परिवारों के मुखियाओं की धर्म वृत्तिका

क्रम	धर्मवृत्तिका	प्रवासियों की संख्या	प्रतिशत
1	हिन्दू	86	86.00
2	इस्लाम	11	11.00
3	सिक्ख	03	03.00
4	अन्य	–	00.00
	समस्त योग	100	100.00

प्रस्तुत तालिका के अन्तर्गत प्रदर्शित प्राथमिक तथ्यों से स्पष्ट है कि 100 प्रवासी परिवारों में से 86 (86 प्रतिशत) हिन्दू, 11 (11 प्रतिशत) इस्लाम तथा 3 (3 प्रतिशत) सिक्ख धर्मावलम्बी पाए गए हैं। निम्न तालिका से सभी 100 सर्वेक्षित प्रवासियों की जाति संरचना को स्पष्ट करती है–

तालिका 2: सर्वेक्षित प्रवासियों के परिवारो की (सामाजिक आधार पर) जाति संरचना

क्रम	जातिवार सामाजिक प्रस्थिति	संख्या	प्रतिशत
1	उच्च जातियां	40	40.00
2	पिछड़ी व अनुसूचित	45	45.00
3	अल्पसंख्यक	14	14.00
4	अन्य	01	01.00
	समस्त योग	100	100.00

प्रसंगाधीन प्रस्तुत तालिका में सभी 100 सर्वेक्षित प्रवासी परिवारा में से 40 (40 प्रतिशत) उच्च (सवर्ण) जातियों के, 45 (45 प्रतिशत) परिवार पिछड़ी व अनुसूचित जातियों के, 14 (14 प्रतिशत) परिवार अल्संख्यक तथा मात्र एक परिवार अन्य ईसाई प्रवासित हुए हैं जो तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि प्रवासी परिवारों में हिन्दुओं की उच्च तथा पिछड़ी व अनुसूचित जातियां हैं। निम्नतालिका प्रवासी परिवारेां के लिंग सापेक्ष वितरण पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है।

तालिका 3: प्रवासी परिवारेां के मुखियाओं का लिंग सापेक्ष विवरण

क्रम	लिंग भेद	प्रवासियों की आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	पुरूष	94	94.00
2	महिला	06	06.00
	सतस्त योग	100	100.00

प्रस्तुति तालिका के प्राथमिक आंकड़ों से स्पष्ट है कि सर्वेक्षित प्रवासियों में 94 (94 प्रतिशत) पुरूष मुखिया तथा 6 (6 प्रतिशत) महिलाएं पायी गयी हैं।
निम्न तालिका सभी 100 प्रवासी परिवारेां में भूमिधर तथा भूमिहीनों के वितरण पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका 4: प्रवासी परिवारों का भूमिधर व भूमिहीन आधार पर वितरण

क्र.सं.	प्रवासी परिवार	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	भूमिधर	22	22.00
2	भूमिहीन	17	17.00
3	अन्य (व्यवसायी/नौकरीपेशा)	61	61.00
	समस्त योग	100	100.00

प्रस्तुत तालिका के प्रथमिक तथ्यों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित 100 प्रवासी परिवारों के मुखिया सूचनादाताओं में से 22 (22 प्रतिशत) प्रवासी परिवार भूमिधर, 17 (17 प्रतिशत) प्रवासी परिवार भूमिहीन तथा 61 (61 प्रतिशत) परिवार व्यवसायी तथा नौकरीपेशा प्रवासियों के परिवारों ने मथुरा में प्रवास किया है। निम्नलिखित तालिका में सभी 100 प्रवासी सूचनादाताओं के व्यवसायों व कार्यो के प्रकारों तथा व्यवसायिक संरचना पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका 5: प्रवासी सूचनादाताओं के कार्यो के प्रकार तथा व्यवसायिक संरचना

क्रम	व्यवसाय/कार्य का प्रकार	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	कृषि	04	04.00
2	नौकरी	54	54.00
3	व्यवसायी/वाणिज्य	07	07.00
4	फैक्ट्री कार्य	04	04.00
5	नाई की दुकान	03	03.00
6	धोबी की दुकान/लाउण्ड्री	02	02.00

7	श्रमिक/शारीरिक श्रम के कार्य	19	19.00
8	अन्य (शिक्षा, कम्प्यूटर, टाइपिंग)	07	07.00
	समस्त योग	100	100.00

प्रस्तुत तालिका के प्राथमिक तथ्यों के विश्लेषण तथा विवेचन से स्पष्ट होता है कि सर्वेक्षित 100 प्रवासियों में से 4(4प्रतिशत) परिवारों में कृषि कार्य, 54 (54 प्रतिशत) परिवारों में नौकरीपेशा 7 (7 प्रतिशत) परिवारों में व्यवसायी/वाणिज्यिक कार्य, 4 (4प्रतिशत), परिवार परिवार फैक्ट्री कार्य 3(3प्रतिशत) परिवार धोबी की दुकान (लाउण्ड्री), 19 (19 प्रतिशत) परिवार श्रमिक कार्य तथा शेष 7 (7 प्रतिशत) परिवार अन्य विभिन्न कार्य– शिक्षा, कम्प्यूटर/टाइपिंग इन्स्टीट्यूट, कोचिंग सेन्टर आदि वाले पाए गए हैं। अर्थात् उक्त उद्देश्यों से परिवारों ने प्रवास किए है। निम्न तालिका नं0 4 (11) प्रवासी 100 सूचनादाताओं की शैक्षिक संरचना/शैक्षिक स्तरों पर संक्षिप्त प्रकाश डालती है–

तालिका 6: प्रवासी सूचनादाताओं की शैक्षिक संरचना

क्रम	शैक्षिक प्रस्थिति	आवृत्तियाँ	प्रतिशत
1	निरक्षर	17	17.00
2	साक्षर	20	20.00
3	शिक्षित	63	63.00
	समस्त योग	100	100.00

प्रस्तुत तालिका में प्रदर्शित प्राथमिक तथ्य यह स्पष्ट करते हैं कि सर्वेक्षित 100 मुखिया प्रवासी सूचनादाताओं में 17 (17 प्रतिशत) प्रवासी मुखिया निरक्षर, 20 (20प्रतिशत) प्रवासी मुखिया साक्षर तथा 63 (63प्रतिशत) प्रवासी मुखिया शिक्षित पाए गए हैं जिनके शैक्षिक स्तरों पर निम्न तालिका प्रवासी मुखियाओं के लिंग सापेक्ष प्रकाश डालती है–

तालिका 7: प्रवासियों की शिक्षा का स्तर तथा आवृत्तियाँ/प्रतिशत

क्रम	लिंगभेद	निरक्षर	साक्षर	प्रायमरी	हा0स्कूल	इण्टर	स्नातक	स्नातकोत्तर	अन्य	योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1	पुरूष	13 (13.00)	18 (18.00)	03 (03.00)	08 (08.00)	10 (10.00)	19 (19.00)	06 (06.00)	17 (17.00)	94 (100.00)
2	महिला	04 (17.00)	02 (02.00)	.	.	.	.	.	.	06 (100.00)
	योग	17 (17.00)	20 (20.00)	03 (03.00)	08 (08.00)	10 (10.00)	19 (19.00)	06 (06.00)	17 (17.00)	100 (100.00)

सर्वेक्षण करने पर विदित हुआ कि 100 प्रवासी मुखिया सूचनाताओं में से 17 (17 प्रतिशत) मुखिया निरक्ष, 20 (20 प्रतिशत) मुखिया साक्षर, 3(3 प्रतिशत) मुखिया प्रायमरी पास, 8(88 प्रतिशत)मुखिया हाईस्कूल पास, 10 (10 प्रतिशत) मुखिया इण्टर पास, 19 (19प्रतिशत) मुखिया स्नातक, 6 (6प्रतिशत) मुखिया स्नातकोत्तर तथा 17 (17 प्रतिशत) मुखिया अन्य विभिन्न शिक्षण उपाधि धारक पाए गए हैं, जिनमें बकील, डॉटर, इन्जीनियर, नर्स, फार्मसिस्ट प्रमुख हैं। एक विहंगम दृष्टि में कहा जा सकता है कि प्रवासियों के शैक्षिक स्तर, प्रवासी परिवारों के उन सदस्यों जो कि गांवों में छूट गए हैं, से उच्च हैं।

प्रवसन का आर्थिक सामाजिक प्रभावः प्रवसन से आर्थिक स्थिति में सुधार के कारण खरेलू खर्च तथा बच्चों की पढ़ाई (शैक्षिक वातावरण) भी ठीक हुई है। लगभग 90 प्रतिशत सर्वेक्षित व्यक्तियों का मानना है कि प्रवासी व्यक्तियों मके पैसे से वे कई आवश्यक कार्य करने में सफल हुए जैसे– लड़की की शादी, घर बनवाना, घर के लिये जमीन खरीदना, खेतों के लिए जमीन खरीदना इत्यादि। प्रवासी व्यक्तियों के घर में आय की प्राप्ति प्रवासिन व्यक्ति के माध्यम से होने लगी है और आश्रित जनसंख्या इसी पैसे से खेती (अपने पास अगर नहीं है, तो बटाई पर लेकर) करने लगी है जबकि पहले खेती तथा पशुपालन आदि काम प्रव्रजित व्यक्ति ही किया करता था। कुछ आश्रित जनसंख्या खेती आदि में रूचि न रखने के कारण पशुपालन गाय, भैंस, बकरी आदि का कार्य कर रहे हैं। जबकि यह प्रवसन पुरूष प्रधान होने के कारण गांवों में या घरों में पुरूषों की कमी होने से चोरी, दुराचार, अपराध आदि की समस्याएं बढ़ी है। कार्यशील जनसंख्या तथा श्रमिकों के गांव से पलायन होने पर कृषि कार्य के दिनों यथा– बुवाई, निराई, कटाई में श्रमिकों की गम्भीर समस्या होने लगी है। इतना ही नहीं यजमान जातियों (नाऊ, धोबी, ब्राह्मण, कहार आदि) के प्रवसन से धारी व्याह, अनुष्ठान, त्यौहार तथा पर्वो पर इनकी कमी महसूस की जाने लगी है। गावों से शिक्षित व्यक्तियों के बड़ी तेजी से प्रवसन होने से अशिक्षितों की संख्या शिक्षितों की तुलना में अधिक है, फलतः घूसखोरी आदि की समस्याये आम बात हो गयी हैं।

निष्कर्ष एवं सुझाव

सामान्य वर्ग के जिन लोगों का प्रवसन हुआ है उसमें से अधिकांश लोगों के पास खेत होने के बावजूद भी कृषि के प्रति उनकी उदासीनता, कृषि का न होना, परम्परागत कृषि की प्रधानता, कृषि कार्यो के दिनों में मजदूरों या श्रमिकों आदि की समस्या, शिक्षा प्राप्ति, नगरीय सुविधाओं तथा नगरों में रोजगार आदि प्राप्त करना गांव की अपेक्षा आसान आदि प्रमुख कारण है। मध्यम वर्गीय लोगों के पास खेतों की कमी या थोड़ी मात्रा में होना, खेतों आदि में मजदूरी के प्रति अरूचि, शिक्षा प्राप्ति, नौकरी, गांव पर रोजगार का उचित व समय से मूल्य न मिलना आदि कारण है। निम्न वर्गीय व्यक्तियों के प्रवसन का प्रमुख कारण मजदूरी में अनिश्चिता, मजदूरी का अत्यन्त कम होना, कृषि भूमि का न होना, खेती बटाई पर लेने पर उसमें श्रम एवं पूंजी अत्यधिक लगना तथा लाभ अनिश्चित एवं अत्यन्त कम होना, उच्च वर्गो द्वारा शोषण आदि उल्लेखनीय कारण हैं। प्रवसन व्यक्तियों में सर्वाधिक लोग विवाहित (71.6 प्रतिशत) है, जबकि अविवाहित अपेक्षाकृत बहुत

ही कम लोग (28.4 प्रतिशत) हैं। कारण यह है कि शादी आदि के होने पर परिवार का खर्च बढ़ जाता है जिसे गांव में प्राप्त करना बहुत ही कठिन हो जाता है, फलतः प्रवसन होता है। प्रवसन की एक और विशेषता अध्ययन क्षेत्र में दृष्टिगत हुई कि व्यक्तिगत प्रवसन 82.5 प्रतिशत तथा परिवार सहित प्रवसन मात्र 17.3 प्रतिशत की अपेक्षा बहुत ही अधिक है कारण स्पष्ट है कि परिवार सहित प्रव्रजित होने पर नगर से गांव की अपेक्षा खर्च अधिक पड़ता है। प्रवसन के पूर्व शिक्षा प्राप्त कर रहे तथा बेरोजगार व्यक्ति प्रवसन के पश्चात् वह अपने व्यवसाय (कुछ शिक्षा हेतु प्रव्रजित हुए) में संलग्न हो गये हैं। नौकरी हो या मजदूरी, व्यापार हो या रोजगार प्रब्रजित व्यक्ति कुछ न कुछ करने लगा है। अतः निःसन्देह कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र में प्रवसन का प्रमुख कारण आर्थिक ही है। सर्वेक्षण में यह भी पाया गया कि प्रवसन पूर्व 2000 रूपये मासिक से कम 65 प्रतिशत व्यक्तियों की आय थी, जबकि प्रवसन के पश्चात दशा बिल्कुल विपरीत होकर मात्र 9.2 प्रतिशत ही रह गयी। गांवों से शहरों की ओर प्रवसन को कम करने हेतु सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं को चाहिए कि व्यापारिक कृषि के प्रति लोगों का ध्यान आकृष्ट कराकर कृषि में आय सुनिश्चित करें। साथ ही कृषि निवेशों आदि में कमी लाकर तथा सब्सिडी आदि को बढ़ाया जाय। कृषि आधारित उद्योगों की स्थापना गांवों के समीप ही हो, ताकि बेरोजगारों, अशिक्षितों और मजदूर वर्गो के लिए कुछ रोजगार आदि के अवसर मिल सके। शिक्षितों आदि के लिए कुछ ऐसे काम दिलायें जाय जिससे उनका प्रवसन रूक सके। नगरीय सुविधाओं को गांव की ओर लाकर भी ग्रामीण प्रवसन पर बहुत हद तक अंकुश लगाया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. Charunilam Francis, Rural-Urban Migration, Rural India, 1960, 43(12).
2. Baghel DS. Research Methodology, Sahitya Bhawan Publishers (Pvt. Ltd.) Agra, 2004.
3. Pension JA. An Analysis of Rural Migration in Developing Countries, 1969.
4. Nandoo K. A comparative study of Urban Migration of america & India, Social Action, 1984, 34(32).
5. William Henary P. Some Aspects of Migration; Sociological Bulletin, 1960, 31(2).
6. Chandana RC. Population Geography, Kalyani Publishers, New Delhi, 1987.
7. Yadav Hira Lal. Elements of Population Geography (Hindi) Radha Publication, New Delhi, 2004.
8. Statical Year book District Mathura, 2020.